टिप्पणी

214hi03

3

वस्तुएँ और सेवाएँ

यह तो आप पढ़ चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताएं असीमित होती हैं तथा उनकी कभी पूर्ण तृप्ति नहीं होती। प्रश्न उठता है कि हमारी कितनी आवश्यकताओं की पूर्ति या तुष्टि हो सकती है? और हम उन्हें किस प्रकार तुष्ट कर सकते हैं?

मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं से होती है जो अनेक अर्थिक क्रियाओं अथवा गतिविधियों से गुजरती हैं। इस पाठ में आप इन्हीं वस्तुओं और सेवाओं के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे। हम इनके प्रकारों तथा उत्पादन, उपभोग, निवेश और मानवीय आवश्यकताओं के संदर्भ में इनके महत्व पर भी चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप कर सकेंगे :

- वस्तु और सेवा शब्दों की व्याख्या;
- विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की पहचान;
- वस्तुओं और सेवाओं में भेद;
- विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के वर्गीकरण का आधार;
- निःशुल्क तथा आर्थिक वस्तुओं व सेवाओं की जानकारी;
- उपभोक्ता वस्तुओं तथा उत्पादक वस्तुओं और सेवाओं में भेद;
- वस्तुएं एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी कैसे हो सकती हैं;
- सार्वजनिक वस्तुओं तथा निजी वस्तुओं में भेद।

3.1 वस्तुएँ और सेवाएँ

अपने दैनिक जीवन में हमारा अनेक वस्तुओं और सेवाओं से सामना होता है। भूख लगने पर हम खाना खाते हैं। जब हमें प्यास लगती है तो हम पानी पीते हैं। इसी प्रकार हम लिखने के लिये पैन और कागज, रहने के लिये मकान, बैठने के लिये कुर्सी, कपड़े धोने की मशीन तथा

मनोरंजक कार्यक्रम देखने के लिये टेलीविजन आदि का प्रयोग करते हैं। ये सब उन वस्तुआं के उदाहरण है जो हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं।

किन्तु हमारी आवश्यकताएं केवल वस्तुओं से ही पूरी नहीं हो जाती। विभिन्न कार्यों में हमें विभिन्न व्यक्तियों की सेवाओं की भी आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिये, नाई हमारे बाल संवारता है, डाक्टर हमारी चिकित्सा करता है, दर्जी हमारे कपड़े सीता है और इसी प्रकार मोची हमारे जूते, चप्पल ठीक करता है। ये सब उन सेवाओं के उदाहरण हैं जो हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं। वस्तुएं तथा सेवाएं दोनों ही मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं। इन वस्तुओं और सेवाओं में भी हमारी आवश्यकताओं की भांति ही विविधता पाई जाती है।

3.2 वस्तुओं और सेवाओं में भेद

यह तो हम जान ही चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये वस्तुएं और सेवाएं दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। आइये, अब इन दोनों के अन्तर को समझने का प्रयास करें। इनके बीच निम्नलिखित मुख्य अन्तर हैं :

वस्तुएं

1. ये **दृश्य** होती हैं - इन्हें देखा और छुआ जा सकता है।
2. इनके **उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर होता है**। पहले इनका उत्पादन होता है और फिर इनका उपभोग।
3. **इनका संग्रह किया जा सकता है**। जब आवश्यक हो तो इनका प्रयोग किया जा सकता है।
4. इन्हें **एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित किया जा सकता है।**

आइये, हम एक वस्तु (कुर्सी) का उदाहरण लेकर इन बातों को स्पष्ट करें। आप कुर्सी को देख और छू सकते हैं। इसे बढ़ई ने अपनी कार्यशाला में बनाया था। आप बाजार से खरीद लाए और इसका प्रयोग कर रहे हैं। अतः इसके उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर आ जाता है। यदि कुछ समय तक आपको इसकी आवश्यकता नहीं हो तो आप इस कुर्सी को किसी गोदाम में रख सकते है। जब आवश्यकता हो फिर गोदाम से निकालकर प्रयोग कर सकते हैं। आप इसे किसी अन्य व्यक्ति को उपहार में दे सकते हैं, चाहें तो बेच भी सकते हैं।

सेवाएं

1. सेवाएं **अदृश्य** होती है अर्थात इन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता।
2. इनके **उत्पादन और उपभोग के बीच समय का अन्तर नहीं होता**। यही कारण है कि इनके उत्पादन और उपभोग साथ-साथ चलते हैं।
3. सेवाओं का **संग्रह नहीं हो सकता** है।
4. सेवाओं का **हस्तांतरण भी सम्भव नहीं होता।**

टिप्पणी

किसी डॉक्टर की चिकित्सा सेवा का उदाहरण उपर्युक्त चारों विशेष लक्षणों को स्पष्ट कर देता है। मरीज की जांच कर दवा लिखने में ही डाक्टर की चिकित्सा सेवा प्रदान हो जाती है। ये सेवा हमें दिखाई नहीं देती। इसे हम छू भी नहीं सकते। जाँच करते ही सेवा पूरी हो जाती है, मरीज द्वारा उस सेवा का उपभोग भी हो जाता है। अतः सेवा के उत्पादन और उपभोग के बीच कोई समय अन्तराल नहीं होता। इस सेवा को भण्डार में रखना या किसी अन्य को हस्तांतरित करना भी संभव नहीं होता।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. इन में से किस-किस को वस्तु कहा जाता है?
   (क) कार (ख) मोबाइल फोन
   (ग) यात्रियों का परिवहन (घ) जूते ठीक करना
2. इनमें से कौन सी वस्तुओं की विशेषताएं हैं?
   (क) वस्तुओं को देखा-छुआ जा सकता है।
   (ख) वस्तुओं का हस्तांतरण नहीं हो सकता।
   (ग) वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग में समय अन्तराल नहीं होता।
3. इनमें से कौन सी सेवाओं की विशेषताएं है?
   (क) सेवाओं को देखा-छुआ जा सकता है।
   (ख) सेवाओं के उत्पादन और उपभोग में समय अन्तराल नहीं होता।
   (ग) सेवाओं का संग्रह किया जा सकता है।
4. मानवीय आवश्यकताएं इनके उपयोग से संतुष्ट होती हैः
   (क) वस्तुएं (ख) सेवाएं
   (ग) वस्तुएं और सेवाएं (घ) इनमें से कोई नहीं

3.3 वस्तुओं और सेवाओं का वर्गीकरण

हम जानते हैं कि विभिन्न प्रकार के उद्यम विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं। उन सब का अलग-अलग अध्ययन कर पाना तो संभव नहीं होता पर उन्हें कुछ एक बड़े वर्गों में बांटकर उनका विधिवत अध्ययन संभव हो पाता है। यह वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। वर्गीकरण से विभिन्न वस्तुओं के सापेक्ष आर्थिक महत्व को भी समझा जा सकता है। हम निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण का अध्ययन करेंगेः

1. निःशुल्क वस्तुएं और आर्थिक वस्तुएं
2. निःशुल्क सेवाएं और आर्थिक सेवाएं
3. उपभोक्ता वस्तुएं और उत्पादक वस्तुएं

4. उपभोक्ता सेवाएं और उत्पादक सेवाएं
5. एकल उपयोगी वस्तुएं तथा दीर्घोपयोगी वस्तुएं
6. निजी वस्तुएं तथा सार्वजनिक वस्तुएं

1. निःशुल्क वस्तुएं और आर्थिक वस्तुएं

मान लो कि आप किसी रेगिस्तान में हैं और वहां रेत का एक बोरा भर लेते हैं। इसके लिये आपको कोई कीमत नहीं देनी पड़ती। किन्तु यदि आप शहर में रेत का बोरा पाना चाहें तो निश्चित ही इसके लिये आपको कीमत चुकानी पड़ेगी। यह उदाहरण निःशुल्क और आर्थिक वस्तुओं का भेद स्पष्ट करता है। **निःशुल्क वस्तुएं प्रकृति की दी हुई उपहार है**। वे प्रचुरता में उपलब्ध हैं - उनकी आपूर्ति मांग से बहुत अधिक होती है। उन्हें पाने के लिये आपको कोई कीमत नहीं देनी पड़ती। इसीलिये उन्हें निःशुल्क वस्तुएं कहा जाता है। संक्षेप में, **निःशुल्क वस्तुएं वे है जिनमें उपयोगिता तो है पर जो दुर्लभ नहीं है।**

दूसरी ओर, हम अनेक वस्तुएं अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं जैसे कि टूथपेस्ट, साबुन, शेविंग क्रीम, जूते, डबल रोटी आदि। ये सभी मानव निर्मित वस्तुएं हैं। इनकी आपूर्ति असीमित नहीं है। इसी तरह हम कई प्रकार की मशीनों, बसें, मेज, कुर्सी, पुस्तकें, पंखे, टेलीविजन आदि का प्रयोग भी करते हैं। ये भी मानव निर्मित हैं और इनकी आपूर्ति असीमित नहीं होती। हम अपने घर में पानी का कई कार्यों के लिये प्रयोग करते हैं। रेत का प्रयोग निर्माण कार्यों में तथा अनेक खनिजों का भी भांति-भांति प्रकार से प्रयोग करते हैं। यहाँ ये वस्तुएं प्रकृति की देन हैं, मानव निर्मित नहीं। किन्तु **इनकी आपूर्ति मांग की अपेक्षा सीमित रहती है**। इसी कारण **ये निःशुल्क नहीं रहती, इनके लिये कीमत चुकानी पड़ती है। ये आर्थिक वस्तुएं हैं।**

अतः आर्थिक वस्तुएं वे (मानव निर्मित अथवा प्रकृति प्रदत्त) वस्तुएं हैं जिनकी मांग आपूर्ति से अधिक होती है। उनकी कीमत चुका कर उन्हें बाजार से खरीदा जा सकता है।

2. निःशुल्क सेवाएं और आर्थिक सेवाएं

निःशुल्क और आर्थिक का विभाजन सेवाओं पर भी लागू हो सकता है। स्नेह तथा आपसी सम्बन्धों पर आधारित सेवाओं का कोई बाजार नहीं होता। उदाहरण के लिये माता-पिता द्वारा बच्चों के लालन-पालन की सेवाएं। **वे सब सेवाएं जिनका बाजार में क्रय-विक्रय होता है, आर्थिक सेवाएं कहलाती हैं**। जैसे, डाक्टर, इंजीनियर आदि की सेवाएं। हमारे आगे के चार वर्ग केवल आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं पर ही लागू होते हैं।

3. उपभोक्ता वस्तुएं और उत्पादक वस्तुएं

यह वर्गीकरण वस्तुओं के उपयोग पर निर्भर है। **जिन वस्तुओं से प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताओं की तुष्टि की जाती है उन्हें उपभोक्ता वस्तु कहते हैं।** उदाहरण के लिये डबल रोटी, फल, दूध, वस्त्र आदि।

उत्पादक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। चूंकि ये दूसरी वस्तुओं के उत्पादन में सहायक होती हैं, इसीलिये उन्हें उत्पादक वस्तुएं

कहते हैं। उदाहरण के लिये, मशीन, औजार, कच्चा माल, बीज, खाद, ट्रैक्टर आदि सभी उत्पादक वस्तुओं के उदाहरण हैं।

3 (क) मध्यवर्ती वस्तुएं

अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में उत्पादक द्वारा प्रयोग किये जाने वाला कच्चा माल, बिजली, ईंधन आदि को मध्यवर्ती वस्तुएं कहते हैं। उदाहरण के लिये बेकरी में डबल रोटी के उत्पादन में प्रयोग किया जाने वाला गेहूँ का आटा मध्यवर्ती वस्तु है।

4. उपभोक्ता सेवाएं तथा उत्पादक सेवाएं

यहाँ भी वर्गीकरण का आधार वस्तुओं की भांति प्रयोग ही है। **जिन सेवाओं का उपयोग सीधे ही उपभोक्ता या परिवार करते हैं, उन्हें उपभोक्ता सेवाएं कहते हैं**। उदाहरणतया, दर्जी द्वारा आपकी कमीज की सिलाई, डाक्टर द्वारा आपकी चिकित्सा, नलके वाले मिस्त्री द्वारा आपके नल की मरम्मत आदि।

दूसरी ओर **उत्पादक सेवाएं वे सेवाएं होती हैं जिनका उपयोग दूसरी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में किया जाता है**। ये अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताएं तुष्ट करती है। उदाहरणतया दर्जी द्वारा किसी वस्त्र निर्माता के लिये कपड़ों की सिलाई, बिजली विभाग के मिस्त्रियों द्वारा आपूर्ति लाइन की मरम्मत, ट्रक द्वारा किसी फैक्ट्री को कच्चे माल का परिवहन आदि।

5. एकल उपयोगी और दीर्घोपयोगी वस्तुएं

सभी प्रकार की वस्तुओं, चाहे वे उपभोक्ता वस्तुएं है अथवा उत्पादक वस्तुएं, को एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी वस्तुओं में वर्गीकृत किया जाता है। **एकल उपयोगी वस्तुएं वे हैं जिनका हम एक बार ही उपयोग कर सकते हैं**। उसी में उनकी सारी उपयोगिता काम आ जाती है। उदाहरणतः, डबलरोटी, मक्खन, अण्डा, दूध आदि एकल उपयोगी उपभोक्ता वस्तुएं हैं। इसी प्रकार एकल उपयोगी उत्पादक वस्तुएं भी एक ही बार उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग हो सकती हैं। उदाहरणतः, कोयला, कच्चा माल, बीज, खाद आदि। चीनी के उत्पादन में गन्ना कच्चा माल है। उसका एक बार ही प्रयोग हो सकता है।

दीर्घोपयोगी वस्तुएं वे वस्तुएं होती है जिनका लम्बे समय तक बार-बार प्रयोग होता है। यहाँ भी उपभोक्ता और उत्पादक वर्ग की दीर्घोपयोगी वस्तुएं होती हैं। दीर्घोपयोगी उपभोक्ता वस्तुएं हैंः कपड़े, फर्नीचर, टेलीविजन, स्कूटर आदि। उपभोक्ता इन्हें बार-बार प्रयोग कर सकता है। दीर्घोपयोगी उत्पादक वस्तुएं उत्पादन प्रक्रिया में बार-बार प्रयोग होती हैं। उदाहरणतः, मशीनें, औजार, ट्रैक्टर आदि। बार-बार प्रयोग से भी ये वस्तुएं पूरी तरह अप्रभावित रहती हों, ऐसी बात नहीं है। वास्तव में, इन वस्तुओं के लगातार प्रयोग से इनके मूल्य में ह्रास हो जाता है।

6. निजी और सार्वजनिक वस्तुएं

वस्तुओं का स्वामित्व के आधार पर भी वर्गीकरण हो सकता है **जिनका स्वामित्व निजी हो और जिन्हें उनके स्वामी ही स्वयं प्रयोग करते हैं, उन्हें हम निजी वस्तुएं कहते हैं**। आपकी सभी अपनी

वस्तुएं निजी कहलाएंगी। जैसे घड़ी, पैन, स्कूटर, मेज, कुर्सी, किताबें, बिस्तर, कपड़े आदि। यदि आप किसी फैक्ट्री के मालिक हैं तो उसकी मशीनें, औजार आदि भी आपकी निजी वस्तुएं होगी।

इनके विपरीत **सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जिन पर सारे समाज का सांझा स्वामित्व होता है और सभी लोग उनका उपयोग भी करते हैं**। उदाहरणार्थ, सड़कें, पार्क, टाउनहाल आदि। ये समाज के सभी सदस्यों को बिना भेदभाव के सुलभ रहते हैं अर्थात इनका उपयोग किसी के लिये भी वर्जित नहीं होता। सरकार तथा निजी उद्यमी दोनों ही सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

निम्नलिखित में से सही कौन है?

1. आर्थिक वस्तुएं वे वस्तुएं है :
   (क) जो दुर्लभ हों
   (ख) जिनकी कीमत हों
   (ग) जो दुर्लभ हों तथा जिनकी कीमत हो।
2. उपभोक्ता वस्तुएं वे वस्तुएं हैं :
   (क) जो आगे उत्पादन में सहायता करती हैं
   (ख) जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करें
   (ग) इनमें से कोई नहीं।
3. उत्पादक वस्तुओं के उदाहरण हैं :
   (क) मशीनें (ख) ट्रैक्टर
   (ग) डबलरोटी (घ) कच्चा माल
4. इनमें से कौन से कथन सत्य हैं?
   (क) निःशुल्क वस्तुएं वे है जिनकी आपूर्ति मांग से अधिक होती है।
   (ख) एकल उपयोगी वस्तुएं वे हैं जिनका केवल एक बार प्रयोग होता है।
   (ग) दीर्घोपयोगी वस्तुओं का बार-बार प्रयोग हो सकता है।
   (घ) सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जिनका स्वामी सारा समाज होता है।

3.4 अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की भूमिका तथा महत्व

वस्तुओं और सेवाओं की अर्थव्यवस्था में बहुमुखी भूमिका होती है। इनकी भूमिका इनके संदर्भ में समझाई जा सकती है :

टिप्पणी

1. मानवीय आवश्यकताएं

आप पढ़ चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताएं असीमित होती हैं और उनमें हमेशा वृद्धि होती रहती है। इससे अभिप्राय है कि यदि वस्त्र, जूते, फर्नीचर, बर्तन, टेलीविजन, स्कूटर, फल, सब्जियां, अनाज आदि वस्तुओं तथा डाक्टर, नलके के तथा बिजली के मिस्त्रियों की सेवाओं आदि की उपलब्धता में वृद्धि हो जाये तो इनसे अधिक मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि होगी।

2. उत्पादन

बढ़ती हुई मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हमें उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु इन उपभोक्ता वस्तुओं की उपलब्धता में वृद्धि अधिक उत्पादक वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता पर निर्भर होती है। यदि हमारे पास अधिक और बेहतर मशीने, कच्चामाल, ट्रैक्टर, बीज, खाद आदि हैं तो हम अधिक उत्पादन कर पायेंगे। इसी प्रकार हमें अधिक परिवहन, बैंक, बीमा आदि सेवाओं की भी आवश्यकता पड़ती है। अतः उत्पादक वस्तुओं और सेवओं की मात्रा और गुणवत्ता ही बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता का निर्धारण करती है।

3. निवेश

वस्तु और सेवाओं के उत्पादन की वृद्धि ही निवेश के स्तर की निर्धारक है। इस उत्पादन का एक अंश ही मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करने में काम आता है। उपभोग से बचा भाग ही आगे उत्पादन वृद्धि में काम आता है क्योंकि इसी से अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण होता है। यदि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक हो तो उपभोग व निवेश दोनों में वृद्धि करना सम्भव हो जाता है। यही अतिरेक (उत्पादन-उपभोग) जितना अधिक होगा, अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता उतनी ही अधिक बढ़ जाएगी।

पाठगत प्रश्न 3.3

प्रत्येक कथन के सामने सत्य/असत्य लिखें :

1. वस्तु और सेवाओं का उपभोग मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि में सहायक है। [ ]
2. वस्तु और सेवाओं की उपलब्धता उत्पादक वस्तुओं की उपलब्धता पर निर्भर है। [ ]
3. अधिक उत्पादन से अभिप्राय है - अधिक उपभोग तथा अधिक निवेश। [ ]

आपने क्या सीखा

- मानवीय आवश्यकताएं अनन्त हैं। वस्तुएं और सेवाएं उन्हें संतुष्ट कर सकती हैं।
- निःशुल्क वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जो बहुलता में उपलब्ध हैं और जिनके लिये बाजार में कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती।

- आर्थिक वस्तुओं की आपूर्ति मांग की अपेक्षा सीमित होती है। बाजार में उनकी कीमत भी होती है।
- निःशुल्क सेवाएं स्नेह और प्रेम पर आधारित होती हैं। इन्हें बाजार में खरीदा नहीं जा सकता।
- आर्थिक सेवाएं वे हैं जिनहें बाजार में खरीदा जा सकता है।
- उपभोक्ता वस्तुएं वे होती हैं जो प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं।
- अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकता पूरी करने वाली वस्तुएं उत्पादक वस्तुएं हैं।
- उपभोक्ता और उत्पादक वस्तुओं को एकल एवं दीर्घोपयोगी वस्तुओं में बांटा जा सकता है। इनके विभाजन का आधार होता है - केवल एक बार काम आने वाली वस्तु एकल उपयोगी तथा बार-बार प्रयोग आने वाली वस्तुएं दीर्घोपयोगी वस्तुएं कहलाती हैं।
- उपभोक्ता सेवाएं प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करती है जबकि उत्पादक सेवाएं वस्तुओं और सेवाओं के आगे उत्पादन करने में सहायता करती हैं।
- वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता तथा परिमाण उत्पादन, निवेश, उपभोग तथा मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि का स्तर निर्धारित करती हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. वस्तुओं और सेवाओं में भेद कीजिये।
2. आर्थिक और निःशुल्क वस्तुओं में भेद कीजिये।
3. उपभोक्ता वस्तुओं तथा उत्पादक वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
4. एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी वस्तुओं में अन्तर बताइये।
5. अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का महत्व और भूमिका बताइये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 3.1

1. क, ख
2. क
3. ख
4. ग

पाठगत प्रश्न 3.2

1. ग
2. ख
3. क, ख, घ
4. क, ख, ग, घ

पाठगत प्रश्न 3.3

1. सत्य
2. सत्य
3. सत्य

मॉड्यूल 2: अर्थव्यवस्था के विषय में

4. अर्थव्यवस्था - अभिप्राय तथा प्रकार
5. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं
6. मूल आर्थिक गतिविधियां